



## आइआइटी के 1190 विद्यार्थी पाएंगे उपाधि

जासं, वाराणसी : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बीएचयू का सातवां दीक्षा समारोह 29 दिसंबर को स्वतंत्रता भवन में आयोजित होगा। इसमें 2018 की परीक्षा में उत्तीर्ण कुल 1190 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की जाएगी। 74 छात्र-छात्राओं को पदक दिए जाएंगे। वहीं परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने

- 29 दिसंबर को स्वतंत्रता भवन में आयोजित होगा समारोह
- 74 छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल, एक को प्रेसिडेंट्स गोल्ड

से नवाजा जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के अध्यक्ष डा. जी. सतीष रेड्डी होंगे। दीक्षा समारोह अपराह्न ढाई बजे से आयोजित होगा। इसके पहले 28 दिसंबर को शाम चार बजे स्वतंत्रता भवन में ही दीक्षा समारोह का पूर्वार्धास किया जाएगा। संस्थान के रजिस्ट्रार डा. एसपी माधुर के अनुसार समारोह में पीएचडी, एमटेक, एमफार्म, आइडीडी, आइएमडी, बीटेक व बीफार्म पाठ्यक्रम के छात्रों व छात्राओं में करीब 1190 उपाधिकां वितरित की जाएंगी। दो छात्रों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए क्रमशः प्रेसिडेंट्स स्वर्ण पदक एवं डायरेक्टर्स स्वर्ण पदक से विभूषित किया जाएगा। छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों में अपनी योग्यता प्रदर्शित करने के लिए वर्ष गोल्ड मेडल प्रदान किया जाएगा।

# परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ी आत्मनिर्भरता

पूर्ण स्वदेशी तकनीक संग स्थापित किए जा रहे हैं संयंत्र 2022 तक छह फीसद न्यूक्लियर एनर्जी का लक्ष्य

गुहमंद रईस • वाराणसी

## परमाणु ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने को अधिक उष्मा की जरूरत

विद्युत ऊर्जा पर बढ़ती निर्भरता व भविष्य की जरूरतों को देखते हुए अन्य प्राकृतिक विकल्पों पर लगातार मंथन जारी है। वहीं परमाणु संयंत्र से बिजली उत्पादन बढ़ाने की दिशा में तेजी से कार्य हो रहे हैं। तकनीकी तौर पर हमारी दूसरे देशों पर निर्भरता भी घटी है। यह बातें भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के प्रोफेसर व परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य पद्मश्री प्रो. आरबी ग्रोवर ने शनिवार को दैनिक जागरण से बातचीत में कही। वह आइआइटी बीएचयू स्थित एबीएलटी व्याख्यान कक्ष में दो दिवसीय संगोष्ठी में भाग लेने आए थे।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में देश के कुल विद्युत उत्पादन का तीन फीसद हिस्सा परमाणु ऊर्जा है, जिसे 2022 तक बढ़ाकर पांच से छह फीसद तक करने का लक्ष्य है। फिलहाल देश में कुल 22 परमाणु संयंत्र काम कर रहे हैं और चार संयंत्र निर्माणाधीन हैं। साथ ही सरकार ने 12 नए संयंत्रों की भी मंजूरी दी है। विदेशी तकनीक पर निर्भरता के सवाल पर कहा कि तमिलनाडु के कुदमकुलम

जागरण संगठनाता, वाराणसी : परमाणु ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने के लिए परमाणु संयंत्र के भीतर अधिक उष्मा पैदा करने की जरूरत है। इसके लिए क्रिटिकल हीट फ्लक्स को समझना बहद जरूरी है। यह बातें आइआइटी, बीएचयू स्थित एबीएलटी व्याख्यान संकुल में शनिवार को वैज्ञानिकों ने कही।

मौका था 'क्रिटिकल हीट फ्लक्स और मल्टीफेज फ्लो' विषयक गोष्ठी के शुभारंभ का। आइआइटी-मुंबई व आइआइटी-बीएचयू की ओर से आयोजित गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य पद्मश्री प्रो. आरबी ग्रोवर ने कहा कि भारत को यदि 2050 तक

में चार प्रेशरइज हैंवी वाटर रिएक्टर रूस के तकनीकी सहयोग से बनाए जा रहे हैं। जबकि देश में बने कुल 22 संयंत्रों में से सिर्फ चार ही विदेशी तकनीक पर आधारित थे।

संयंत्र के लिए साइट के मानक : परमाणु



मीडिया से मुखातिब परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य प्रो. आरबी ग्रोवर

अपने पड़ोसी देश चीन के बराबर प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत के स्तर तक पहुंचना है तो उसे परमाणु ऊर्जा विकास को ओर ध्यान देना होगा। वहीं परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद के अध्यक्ष

एसए भारद्वाज ने कहा कि वैज्ञानिकों को परमाणु कचरे के दुष्परिणाम को कम करने की चुनौती स्वीकार करनी होगी। इस दौरान आइआइटी, बीएचयू के निदेशक प्रो. पीके जैन, मेकेनिकल

### संगोष्ठी

- आइआइटी-बीएचयू में रस्सी फिजली उत्कृष्ट करने को लेकर मंथन
- वैज्ञानिकों की जुटान, क्रिटिकल फ्लक्स व मल्टीफेज फ्लो पर की गई

इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष प्रो. एपी हर्षा ने भी विचार व्यक्त किए। स्वागत संगोष्ठी संयोजक प्रो. पी घोष व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अतुल श्रीवास्तव ने किया।

वहीं दूसरी ओर प्रो. आरबी ग्रोवर ने मीडिया से कहा कि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। जस्वत तकनीकी सुधार की है।

संयंत्र स्थापित करने के लिए सभी राज्यों को पत्र लिखे जाते हैं। संयंत्र के लिए ऐसी जगह का चयन किया जाता है, जहां पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो। साथ ही आस-पास आबादी बहुत ही कम हो। गन्वों की ओर से प्रपोजल आने के बाद साइट्स का

जिओ टेक्निकल सर्वे किया जाता है। पानी की उपलब्धता, स्वायत्त कंटीशन के साथ ही भूकंप का पुनरा डायट भी खंगाला जाता है। तकनीकी रूप से आशुस्त होने के बाद ही सरकार साइट अधिग्रहित करती है।

2020 तक तैयार होंगे चार संयंत्र :

गुजरात के काकरापार व गुजरात के कोटा स्थित रावतभाटा में क्रमशः दो-दो संयंत्रों का निर्माण कार्य चल रहा है। पूर्णता भारतीय तकनीक से बनने वाले इन संयंत्रों का कार्य 2020 तक पूरा कर लिया जाएगा।